भारत की पुण्य भूमि सनातन काल से देवताओं, दिव्यात्माओं, संत-महात्माओं, आचार्यों और युगस्रष्टा, युगद्रष्टा राजाओं, नेताओं, विचारकों और समाज-सुधारकों की रही है। प्राचीन काल में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम, मनोहारी-लीलावतारी श्रीकृष्ण, अहिंसाप्रिय तथा करुणावतार तथागत बुद्ध, प्रजावत्सल सम्राट अशोक, धर्मचेता-ज्ञानी-ध्यानी गुरु नानक देव जी महाराज समेत मध्यकाल और आधुनिक काल तक में भारत-भू में महान आत्माओं और महापुरुषों की अनंत, अविच्छिन्न और दीर्घ परंपरा रही है। कहना न होगा कि इन अवतारी, लोकोपकारी, सिद्ध संतों-आचार्यों-अग्रगण्यों के जीवमात्र और मानवमात्र के प्रति प्रेम, करुणा, स्नेह, उदात्त भाव और सेवा-परोपकार भाव से सिक्त विचार और भावनाओं ने न केवल भारत भू, वरन अखिल विश्व तक को प्रभावित, प्रेरित और उद्वेलित किया है। यह अखिल भारत ऐसे ही महान और प्रेरक-उद्बोधक व्यक्तित्वों, महनीय विचारकों के उत्तम विचारों एवं आप्त वचनों से महक-महक करता एक सुंदर, सुगंधित उद्यान रूपी एक महान और जीवंत राष्ट्र है। प्रस्तुत पुस्तक ऐसे ही राष्ट्र चेतना के शिखर प्रहरियों एवं राष्ट्र चेतना के अग्रदूतों के जीवन और कर्म को स्मरण कर उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करने का एक विनम्र प्रयास है। कुल मिलाकर, महान व्यक्तित्वों का भीना-भीना गुलदस्ता है यह प्रस्तुत पुस्तक। देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों और वहाँ शोध करने वाले छात्र-छात्राओं के शोध आलेखों इस विशिष्ट संचयन का संकलन-संपादन डॉ. शैलेश शुक्ला ने किया है।

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा से न्यू मीडिया में हिंदी साहित्य की उभरती प्रवृत्तियाँ : एक आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त **डॉ. शैलेश शुक्ला** पूर्व में देश की राजधानी दिल्ली से प्रकाशित होने वाली राष्ट्रीय मासिक हिंदी पत्रिका *साक्षी भारत* तथा समाचार पत्रिका *दिल्ली न्यूजट्रैक* में उप-संपादक के पद पर रहे। तत्पश्चात, सिक्किम केंद्रीय विश्वविद्यालय में राजभाषा अधिकारी के पद पर वर्षों अपनी सेवा दी। संप्रति, बेल्लारी स्थित भारत सरकार के उपक्रम, एनएमडीसी के राजभाषा विभाग में सहायक प्रबंधक के पद पर कार्यरत हैं।

इंडिका इन्फोमीडिया
नई दिल्ली

वेबसाइट
www.indicainfomedia.com

ISBN 978-81-89450-78-6

मूल्य : 300/-

राष्ट्र-चेतना के शिखर प्रहरी संपादन : डॉ. शैलेश शुक्ला

राष्ट्र-चेतना के शिखर प्रहरी

संपादन
डॉ. शैलेश शुक्ला

ISBN : 978-81-89450-78-6

राष्ट्र चेतना के शिखर प्रहरी

संपादन : शैलेश शुक्ला
सर्वाधिकार © : प्रकाशक

प्रकाशक
इंडिका इन्फोमीडिया
डब्लू.जेड. 322, जेल रोड, नांगल राया, नई दिल्ली–110046
मोबा. : 09350951555, ई-मेल : indicainfomedia@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2020
मूल्य : ₹ 300

आवरण
इंडिका इन्फोमीडिया

मुद्रक
आर. प्रिंट हाउस, हरिनगर, नई दिल्ली–110064

Rashtra Chetna Ke Shikhar Prahari: A Hindi Biographical Anthology
Edited by Shailesh Shukla
Price: ₹ 300/-

अनुक्रम

1. मानव जाति के पथ-प्रदर्शक :
मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम 1
गजानन पांडेय

2. लीलापुरुष श्रीकृष्ण 9
डॉ. रजनी धाकरे

3. तथागत गौतम बुद्ध :
महाकवि रवीन्द्र की रचना अभिसार के संदर्भ में 19
डॉ. मयंक कुमार सिंह

4. गुरु नानक देव का सांसारिक जीवन 24
डॉ. बलवीर सिंह 'राना'

5. भक्तिकालीन महान संत कबीरदास का साहित्य :
जन कल्याण का भाव 34
डॉ. बिजेंद्र कुमार

6. पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होलकर
वीरांगना, प्रभावशाली और कुशल राजनीतिज्ञ 45
किसन भानुदास वाघमारे

7. स्वामी दयानंद सरस्वती का धार्मिक एवं राजनीतिक दर्शन 52
डॉ. गोपाल सिंह चौहान

भक्तिकालीन महान संत कबीरदास का साहित्य : जन कल्याण का भाव

डॉ. बिजेंद्र कुमार

शोध सार

संवत् 1455 ई. को जन्मे हिंदी साहित्य के महान संत कबीरदास का जन्म असाधारण परिस्थितियों में हुआ। जन्म विधवा ब्राह्मणी ने दिया, पालन-पोषण मुस्लिम जुलाहा दंपती ने किया। इसलिए जन्म से हिंदू एवं पालन-पोषण से मुसलमान हो गए। जिस समाज में बड़े हुए वह समाज हिंदू-मुस्लिम के द्वेष भाव से भरा हुआ था। एक ऐसा समाज जिसमें मुस्लिम राजा हिंदुओं पर निरंतर अन्याय-अत्याचार कर रहा था। उसके धर्मगुरु हिंदुओं को डरा-धमकाकर, लालच देकर, अपने धर्म को श्रेष्ठ बताकर धर्म परिवर्तन करवा रहे थे। हिंदू जनता हताश-निराश थी, जिनकी बहू-बेटियों की इज्जत सरेआम नीलाम हो रही थी। जहाँ धर्म के ठेकेदार धर्म के नाम पर भोली-भाली जनता को आडंबरों-पाखंडों में फँसाकर उसका शोषण कर रहे थे। ऐसे में भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के महान संत कबीरदास जी ने अपनी निर्गुण निराकार ईश्वर की भक्ति का संदेश जनकल्याण के लिए समाज में प्रचारित-प्रसारित किया। उन्होंने धर्म के ठेकेदारों को बताया कि अल्लाह-ईश्वर एक हैं। हम सब उसी की संतान हैं। हमें उस निर्गुण राम का ही नाम सिमरन करना चाहिए।

अल्लाह एक नूर उपाया, ताकि कैसी निंदा।
उस नूर तै सब जग किन्हा, कौन भला कौन मंदा ॥

इस प्रकार कबीरदास ने समाज में फैले धर्मगत द्वेषभाव को समाप्त कर, हिंदू-मुस्लिम एकता पर बल दिया। क्योंकि वे जानते थे कि जब तक इन दोनों धर्मों के जन एक होकर नहीं रहेंगे, तब तक किसी का भी कल्याण संभव नहीं है और न ही समाज में शांति स्थापित हो सकती है। इसलिए मानव-मात्र के कल्याण के लिए आपसी भाईचारा, धार्मिक सद्भाव एवं सहयोग आवश्यक है। इसी कारण कबीरदास की वाणी का महत्व है जो आज भी प्रासंगिक है।

भूमिका

हिंदी साहित्य के मध्यकाल की भक्तिकालीन काव्यधारा के अंतर्गत निर्गुण भक्ति भाव को धारण करने वाली दो धाराएँ बहीं, जिसमें एक थी सूफी काव्यधारा और दूसरी थी संत काव्यधारा। इस संत काव्यधारा के प्रमुख महान संत कवि थे कबीरदास, जिन्होंने अपनी वाणी के द्वारा मानव-मात्र के कल्याण का संदेश दिया। समाज में बढ़ रहे द्वेषभाव, पाखंड, आडंबर, असंतोष के खिलाफ एक ऐसा आंदोलन खड़ा किया, जिसकी आँधी में वैषम्य का वृक्ष उखड़ गया। समाज को ऐसा वातावरण मिला, जिसको धारण करके मानव अपने कल्याण और परलोक का रास्ता उज्ज्वल कर सका।

कबीरदास : जीवन परिचय

कबीरदास का जन्म कब हुआ, कहाँ हुआ, यह अभी तक निश्चित नहीं हो पाया है। इस पर आज भी शोध कार्य चल रहे हैं। फिर भी अनेक विद्वानों के विचारों के आधार पर कबीरदास जी का जन्म संवत् 1455 माना जाता है। यह जनश्रुतियों के आधार पर है। कहा जाता है कि इनका जन्म विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उसने लोक-लाज के कारण इनको लहरतारा नामक तालाब में छोड़ दिया था, जहाँ से नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपती ने इनका पालन-पोषण किया। कबीरपंथियों में इनके जन्म के विषय में यह पद प्रसिद्ध है :